Birthday Puja

Date	:	21st March 1999
Place	:	Delhi
Type	:	Puja
Speech Language	:	Hindi & English

CONTENTS

I Transcript

Hindi	02 - 02
English	06 - 07
Marathi	-

II Translation

English	-
Hindi	03 - 05
Marathi	08 - 09

ORIGINAL TRANSCRIPT

HINDI TALK

Scanned from Hindi Chaitanya Lahari

आप लोगों का ये प्यार देखकर के मेरा हृदय भर आया है और ये सोचकर कि प्यार कितनी बड़ी शक्ति है, इससे लोग इतने आकर्षित होते हैं और आनन्दित होते हैं। ये बड़ी आश्चर्य की बात है। इस कलियुग में प्यार का महात्मय इतना तो किसी ने नहीं देखा होगा। मैं सोचती हूँ कि इसको देखकर के आप सभी लोग अपना प्यार बढ़ाना सीखें। वो चीज बहुत आसान है। वो इस प्रकार कि आप ध्यान करें, सुबह-शाम। तो आपके अन्दर के जो बुरे विचार हैं, जिससे आप ईर्ष्या करते हैं और क्रोधित होते हैं और छोटी-छोटी बात पे बुरा मान जाते हैं, ऐसे सारे विचार खत्म हो जाएंगे। उसके बाद बच क्या जाता है। निर्मल प्रेम। इस प्रेम से आप सारे संसार को एक नया जीवन दे सकते हैं।

परमात्मा आपको आशीर्वादित करें

HINDI TRANSLATION

(English Talk)

Scanned from Hindi Chaitanya Lahari

हिन्दी प्रवचन में मैंने बताया, एक व्यक्ति के प्रेम की अभिव्यक्ति आप यहाँ बहुत सी आँखो में देख सकते हैं। आपके उत्साह को देखकर मेरा हृदय प्रेम से भर गया, महान प्रेम से। तो हम देख सकते हैं कि यह प्रेम कितना महान है! यदि आप सच्चे हृदय से सुबह शाम ध्यान करें तो सभी प्रकार की दुर्भावनाओं, बुराइयों और आत्मघातक तत्वों को भी सहजयोग में बड़ी सुगमता से सुधारा जा सकता है और नियंत्रित किया जा सकता है। परन्तु ध्यान करते हुए आपको अपनी घड़ियाँ नहीं देखनी चाहिए, आनन्द लेना चाहिए, ध्यान का आनन्द लेना चाहिए। यह सोचकर कि आपके आत्मसम्मान को चुनौती दी गई है। छोटी-छोटी चीजों के लिए बुरा मानने, चिड़चिड़ाने की अपेक्षा ध्यान आपको अन्य लोगों से प्रेम करने, उन्हें क्षमा करने की शक्ति देगा। कई बार हम लोगों के बिना किसी दोष के, उनके प्रति आक्रामक हो उठते हैं, बहुत आक्रामक। सबसे अच्छा तरीका ये है कि हम दूसरे व्यक्ति की चैतन्य लहरी को देखें। चैतन्य लहरियाँ यदि खराब हैं तो लड़ने का कोई लाभ नहीं। इससे और अधिक भ्रम पैदा हो जाएगा। जिस व्यक्ति की चैतन्य लहरियाँ खराब हैं उससे न तो आप झगड़ा कर सकते हैं और न ही उसे नियंत्रित कर सकते हैं। जो व्यक्ति स्वयं को बहुत महत्वपूर्ण मानता है उसे शान्त करने की या उससे समझौता करने की या उसके मिथ्या अभियान को बढ़ावा देने की आपको कोई आवश्यकता नहीं। ऐसा करके आप उसे और अधिक बिगाड़ते हैं। तो अत्यन्त मधुर एवं भिन्न प्रकार से अपने प्रेम का प्रदर्शन करना ही सर्वोत्तम है।

मैं एक उदाहरण दूँगी जिसे पहले भी बहुत बार दे चुकी हूँ। एक बार मैं गगनगिरी महाराज के पास गई वे एक ऊँचे पहाड़ पर रहते थे जहाँ कार आदि वाहन न जा सकते थे। अतः मुझे पैदल जाना पड़ा। सभी सहजयोगी पूछने लगे, "श्री माताजी, आखिर आप वहाँ क्यों जा रही हैं?" मैंने कहा, "आप चैतन्य लहरियाँ देखें, अच्छी चैतन्य लहरियाँ आ रही हैं न! इसीलिए मैं जा रही हूँ।" गगनगिरी ने बहुत से लोगों को मेरे विषय में बताया था कि आदिशक्ति मुम्बई में अवतरित हुई है, आप लोग मेरे पास क्यों आते हैं? उन लोगों ने ये सब हमें बताया। मैंने सोचा कि मुझे इस सन्त से मिलना चाहिए और मैं उससे मिलने के लिए उसके स्थान पर गई। उसका वर्षा पर नियंत्रण था, वर्षा को वह नियंत्रित कर सकता था। जब मैं वहाँ पहुँची तो एक शिला पर बैठा गुस्से से वह अपना सिर हिला रहा था। वर्षा इतने जोर से हो रही थी कि जब मैं उसकी कुटिया पर पहुँची तब तक पूरी तरह से नहा चुकी थी। मैं उस गुफा में गई जहाँ वह रहता था और वर्षा पर क्रोध से भरा हुआ। वह अन्दर आया। कहने लगा,"माँ आपने मुझे वर्षा रोकने क्यों नहीं दी?" मैंने कहा, "मैंने ऐसा कुछ नहीं किया।" "नहीं आपने ऐसा किया क्योंकि मैं तो सदैव वर्षा को नियंत्रित करता हूँ। आज मेरे निमंत्रण से आप यहां आ रही थीं तो इस वर्षा को मर्यादा में रहना चाहिए था।" मैंने कहा," नहीं, नहीं, उसने कोई अपराध नहीं

किया" "तो ऐसा क्यों हुआ?" वह अत्यन्त क्रोधित था। मैंने कहा तुम शान्त हो जाओ, मैं बताती हूँ कि क्या हुआ। देखो तुम एक सन्यासी हो और तुम मेरे लिए एक साड़ी खरीद कर लाए हो। सन्यासी से तो मैं साड़ी ले नहीं सकती। तो वर्षा ने मेरे इस कार्य को आसान कर दिया है। अब मैं पूरी तरह भीग गई हूँ इसलिए तुम्हारी साड़ी मुझे लेनी ही पड़ेगी। मेरे प्रति उसका प्रेम उमड़ पड़ा और उसकी आँखों से अश्रुधारा बह निकली। मेरे चरणों पर वह गिर गया कहने लगा माँ प्रेम की महानता मुझे अब पता लगी है। किस प्रकार यह सांसारिक चीज़ों तथा शुष्क आचरण से हटाकर एक ऐसे स्थान पर ले जाता है जहाँ आप प्रेम की वर्षा का आनन्द लेते हैं। मैं यह एक कहानी आपको सुना रही हूँ परन्तु इसके पीछे छिपा सार ये है कि आप अपने प्रेम, शुद्ध प्रेम की युक्तियों को आजमाएं और देखें कि यह किस प्रकार कार्य करती है। शनैः शनैः आप इनको उपयोग करना सीख जाएंगे। ऐसा करना आप छोड़ें नहीं। मैं जानती हूँ कि कुछ लोग अत्यंत कठिन होते हैं मैं इस बात से सहमत हूँ । परन्तु कम से कम उन लोगों पर तो इस प्रेम को आजमाएं जो बहुत कठोर नहीं हैं। आप हैरान होंगे, इस प्रकार आपको अच्छी संगति, बहुत से मित्र और मित्रता प्राप्त हो जाएगी, जैसे हमें सहजयोग में प्राप्त हुई है। पहली बार जब मैं दिल्ली आई थी तो इस स्थान से मुझे बहुत घबराहट हुई क्योंकि बहुत ही थोड़े सहजयोगी थे। न जाने क्यों वे मेरी पूजा करने चाहते थे। हो सकता है मुम्बई के लोगों ने उन्हें कुछ बताया हो। वे कुमकुम तथा पूजा का अन्य सामान छोटी-छोटी प्लास्टिक की बोतलों में ले आए। उनकी अज्ञानता के कारण मैं तो सिकुड़ गई। मैंने सोचा अब क्या करें? क्या होगा? पर आज देखें वही दिल्ली कितनी महान, सुन्दर एवं उत्साह पूर्ण हो गई है। अपने झण्डे उठाए हुए मैंने उन्हें देखा। मैं नहीं जानती थी कि झण्डों का इस प्रकार का जुलूस यहाँ होगा, यद्यपि एक दो बार ऐसा जुलूस कबैला में अवश्य निकाला गया। किस तरह से वे एक दूसरे का आनन्द उठा रहे थे! यह वास्तव में प्रशंसनीय है आप यदि प्रेम का आनन्द लेने लगेंगे तो कोई अन्य चीज आपको अच्छी नहीं लगेगी। परन्तु प्रेम अन्य लोगों के लिए होना चाहिए केवल अपने लिए नहीं। आप देखेंगे कि आपका शरीर, मस्तिष्क और विचार, सभी शक्तियाँ अन्य लोगों के लिए, अपने लिए नहीं, प्रेम का सृजन करने में लगी रहेंगी। जिस प्रकार आप अन्धेरे में देख नहीं पाते और थोड़ा सा भी प्रकाश हो जाए तो वह चारों ओर फैल जाता है। इसी प्रकार सहजयोग में व्यक्ति का पूरा दृष्टिकोण ही परिवर्तित हो जाता है। प्रकाश से किसी को यह नहीं बताना पड़ता कि तुम्हें चहुँ ओर फैलना है। आप सब भी अब साक्षात्कारी हैं, प्रेम के प्रकाश से प्रकाशमान। प्रेम का वह प्रकाश स्वतः चहुँ ओर फैलता है स्वतः, सहज। युवा शक्ति को नाचते और आनन्द लेते देखकर तो मैं भाव-विभोर हो गई। यह अत्यन्त महान आशीष है क्योंकि आजकल हमारे युवा बच्चे, युवा पीढ़ी भटक रही है। अन्य देशों की तरह से तो वे नहीं भटक रहे हैं परन्तु उन्हें बिगाड़ने और भ्रष्ट पाश्चात्य व्यक्तित्व बनाने का प्रयत्न जोरों पर है। परन्तु अब मैंने देखा है कि युवा शक्ति के ये सहज बच्चे अपनी जाति-पाति को भुलाकर एक दूसरे की संगति का आनन्द ले रहे हैं। यह इस देश में तथा सभी देशों में घटित होना आवश्यक है। अत्यन्त आवश्यक है कि हम एक होकर एक दूसरे की एकाकारिता का आनन्द लें। एक

दूसरे का आनन्द यदि हम नहीं लेते तो हम समुद्र से बाहर पड़ी उस बूँद की तरह से हैं जो किसी भी समय सूख सकती है। परन्तु समुद्र के अंग-प्रत्यंग यदि आप बन जाएं तो उसकी हर लहर का आनन्द आप उठाते हैं। आप उसके अंग-प्रत्यंग हैं क्योंकि अब आपका कोई भिन्न व्यक्तित्व नहीं है। कोई भी चीज़ जो हमें हमारे समाज, संस्कृति, आचरण या व्यक्तिगत जीवन में भिन्नता-विशिष्टता दे उसे नियन्त्रित कर लिया जाना चाहिए। इससे पारिवारिक जीवन से लेकर राष्ट्रीय जीवन और अन्तर्राष्ट्रीय जीवन तक की बहुत सी समस्याओं का समाधान हो जाएगा। तो भिन्नता प्रदायक ऐसी भावनाएं नियन्त्रित कर लेनी चाहिए जो हमें अपना घर, अपना राज्य, अपना राष्ट्र प्राप्त करने के लिए प्रेरित करती हों। शनैः शनैः सभी राष्ट्र एक हो जाएंगे। मुझे इसका पूर्ण विश्वास है क्योंकि महान समय आ रहा है और अधिकारी वर्ग के बहुत से लोग सहजयोग को अपना लेंगे। एक बार जब ऐसा हो जाएगा तो स्थिति बहुत भिन्न हो जाएगी। आज उनमें यह बात नहीं है, वे सहजयोगी नहीं हैं। हमारे प्रेम के इस महान आन्दोलन का उन्हें बिल्कुल ज्ञान नहीं है। यही कारण है कि वे सभी कुछ अलग से चाहते हैं। वे नहीं जानते कि उनके आस पास की गर्मी उन्हें झुलस देगी या भयानक बारिश उन्हें बहा कर ले जाएगी या पृथ्वी माँ उन्हें निगल लेंगी। अतः जितने चाहे भेदभाव हों हमें एक होकर रहना है। आखिरकार आप भिन्न परिवारों में जन्मे हैं, सभी एक परिवार में तो जन्म नहीं ले सकते। परन्तु अब आप सहजयोग परिवार के हैं और सहजयोग परिवार एक है। यह भिन्न अस्तित्व या भिन्न विशेषताओं में विश्वास नहीं करता। हम सब परस्पर एक हैं और बाह्य भेदभावों की हमें कोई परवाह नहीं। मैं बहुत अधिक प्रभावित हुई क्योंकि नया वर्ष हमारे लिए बहुत सी चुनौतियाँ लेकर आ रहा है जिन्हें हमें स्वीकार करना होगा। हमें स्वीकार करना होगा कि कलियुग समाप्त हो गया है। हमें सत्ययुग स्थापित करना है। इसके लिए आप सबको, सभी देशों के सहजयोगियों को सोचना चाहिए। किस प्रकार आप यह कार्य अपने देश में तथा अन्य देशों में कर सकते हैं? अन्य देशों में क्या समस्याएं हैं? बाहर की ओर दृष्टि डालें, केवल अपने तक ही इसे सीमित न करें, ताकि आप ये न कहते रहें मुझे ये चाहिए, मुझे वो चाहिए। हमें समझना चाहिए कि अन्य लोगों की आवश्यकता क्या है? हमारे समाज, राष्ट्र और विश्व के लोगों की क्या आवश्यकता है। अच्छा होगा कि आप उनकी आवश्यकता को लिख लें। ऐसा करना बेहतर होगा, यह कार्य करेगा। हो सकता है कि इसमें शुद्धिकरण किया जाए परन्तु सहजयोगियों के लिए आवश्यक है कि बैठकर लिख लें कि विश्व की क्या आवश्यकता है और क्या किया जाना चाहिए? आप सबके लिए इस प्रकार के एक रूप समाज, जैसा आज यहाँ पर है, की आकांक्षा करना आपके लिए वास्तव में बहुत अच्छा विचार है। आप हैरान होंगे, कि एक दिन हम अपने प्रेम, सम्मान और सेवा से बाकी सभी लोगों का पथ-प्रदर्शन एवं नेतृत्व करेंगे। अतः यह समय बहुत महत्वपूर्ण है, आप सब लोगों को इस दिशा में सोचना चाहिए। हार्दिक धन्यवाद।

परमात्मा आपको आशीर्वादित करें।

ORIGINAL TRANSCRIPT

ENGLISH TALK

I have told them in Hindi language that love, you can see one person's love manifested in so many eyes here. And when I saw the enthusiasm also My heart got filled with great love, greater love.

So one can see how powerful is this love. All kinds of bad feelings, negative thinking and also self-destructive elements can be corrected and controlled very simply in Sahaja Yoga, if you with sincere heart meditate morning and evening, twice. That time you shouldn't see your watches, of course, but enjoy, enjoy your meditation. That will give you such a strength to love others, to forgive others; instead of you feeling bad for small, small things, you feeling irritated because you think your self-respect is challenged, or else sometimes we become aggressive towards some people, very aggressive, for no fault of theirs. Best thing is to see the vibrations of another person. If the vibrations are bad, no use fighting, it will create more confusion. A person who has very bad vibrations, you can't fight with that person, you cannot control that person. Or a person who is too much of self-importance, you should not try to pacify him or sort of try to negotiate with him, or also sometimes people try to pamper his vanity. By doing that you are spoiling him more. So the best thing is to show your love in very sweet and different manner. I'll give you an example which I've given many a times, that I went to see this Gagangarh Maharaj who was living on a very high mountain, and there was no way of going by car or anything, and I had to walk.

So everybody said, “Mother, why should You go there after all?”

I said, “You see the vibrations. Good vibrations coming, all right? That's why I'm going.”

But he had told many people about Me, and he said that “Adi Shakti is born in Bombay, why do you come to me?” So they told us.

So I said, “I must see this man,” and that's how I went to his place to meet him.

Now, he's supposed to control the rain. He could control the rain. So he was sitting there on a stone and he was moving his head with great agitation, when I reached there. And it was raining so heavily that I went up to his place when I was completely drenched. So I went inside the cave where he used to live, and he came back with great anger towards the rain.

So he said, “Mother, why did You not allow me to control the rain?”

I said, “I didn't do that.”

“No, You did; because I can always control the rain, and You were coming all the way with my invitation, and this rain should not have misbehaved.”

I said, “No, no, he didn't misbehave.” So what happened, he was quite in a temper, you know. I said, “You settle down, I'll tell you what has happened. See, you have bought a sari for Me and you are a sanyasi, and I won't take a sari from a sanyasi, so the rain has made it convenient. Now it's all drenched so I'll have to take your sari.”

Immediately, you see, he felt terrible love for Me, started crying and he fell at My feet. And then he said, “Mother, now I know what is the greatness of love, how it takes you away from mundane things and dry behavior, and takes you to a place where you can enjoy the showers of love.” This is one of the stories I am telling you. But the main thing behind the whole episode is this, that you should try your love, your tricks of pure love, pure love, and it works. And you must learn, gradually you will learn how to try. You should not give up. Some people are very difficult, I agree – very, very difficult. But at least try with people who are not so difficult. And you'll be amazed that you'll have a good company and lots of friends and friendship, as we have here now in Sahaja Yoga.

First time when I came to Delhi I got such a fright of this place, because there were very few Sahaja yogis and they brought – I don't know why they wanted to do My puja, might be Bombay people must have told them, something – and they brought kum-kum and everything in a plastic little, little bottles – oh, ba! I really shrunk, you know, with their ignorance. I said, “Now what to do? What will happen?” But today, see, same Delhi which has become so great and so beautiful, and so enthusiastic. I saw them with their flags and I didn't know there's such a procession of flags will be here, though we had once or twice, I think, in Cabella. But how they were enjoying each other! It's really remarkable. If you can enjoy love, you won't enjoy anything else but love for other people, and not for yourself. On the contrary you will see that your body, your mind, your thoughts, everything are directed towards creating love for others, and not for yourself. The whole attitude changes. Like in the darkness you can't see anything, but even there's a small light, it spreads all over. Nobody tells the light that “You have to spread the light all over,” but it does. In the same way you all are enlightened people, you are all enlightened with love; and the light of this love spreads automatically, spontaneously, sahaj. I was also very much enamored the way our Yuva Shakti was dancing and enjoying. I think it's a very great blessing, because these days our young children, our young people are getting astray. They are not so badly off as in other countries, but quite a big trend is going on to spoil them and to make them a, what you'd call a very Westernized, spoiled personality. But now I saw so many of these dancing together, forgetting their caste, creed, everything, and enjoying each other's company. This is something has to happen in this country and in every country, that we should all feel oneness and enjoy the oneness with each other. If we do not enjoy we are like a drop outside the ocean, which can be dried any time. But if you are a part and a parcel of that ocean, then what happens is that every movement of the ocean you carry with you, and you are part and parcel of that ocean absolutely, because you do not have separate identity.

All these things that make a separate identity in our society or in our culture or in our behavior, in personal lives, all should be completely curbed down. And this will settle many problems, from family life to national life, to international life. So we should curb down all such feelings of separatedness, that we should have a separate house, separate state, separate nation. Gradually all nations will become one, I am sure of that; because great times are coming, and so many people at the helm of affairs will take to Sahaja Yoga. Once they take to Sahaja Yog, then things will be very much different. Today it is not with them, Sahaja Yoga is not with them. They have no knowledge of our great movement of love, so they want to have separate of everything. They don't know tomorrow they will be scorched away with the heat around, or maybe with the rain they'll be washed away, or maybe that the Mother Earth might absorb them. So we all should be together, whatever may be the differences. In different families we are born – after all, all cannot be born in one family. But now you belong to Sahaja Yoga family, and this Sahaja Yoga family is one. It doesn't believe in having separate existence or separate speciality. We're all one with each other, and we don't care what sort of differences are outside.

I was really very much touched, because now the new year is coming with a new challenge for all of us which we have to accept, that Kali Yuga is over and we have to establish the Satya Yuga; for which all of you from every country should have thinking, how you can do it in your country and in other country. What are the problems in another country? Put your attention outside, not inside this way that you should say that I need this, I need that, I need that. We should know what other people need: what is their need, what the people in our society, in our nation, in our world require? Better write them down: what do they require? It's better, it will work; might be, it might be corrected. It's very important for Sahaja yogis to sit down and write down what the world needs, and what is to be done. It will be a nice idea for all of you to really aspire for that kind of homogeneous society that we have here today. And we'll be one day, you will be surprised that we will be the ones who will guide and lead the rest of the people with our love, attention and care. So it's very important time, and at this time we should all think on those lines.

Thank you very much. May God bless you.

MARATHI TRANSLATION

(English Talk)

Scanned from Marathi Chaitanya Lahari

तुम्हा सर्व लोकांचे हे प्रेम बघून माझे हृदय अगदी भरून आले आहे. इतक्या मोठ्या संख्येने जमलेल्या तुम्हा लोकांचा उत्साह व आनंद पाहून प्रेम ही केवढी महान शक्ति आहे याचाच प्रत्यय येतो. या कलियुगातही प्रेमाची ही महती बघायला मिळते हेहि एक नवलच म्हणायला हवे. मला असे सांगावेसे वाटते की तुम्ही सर्वांनी आपल्यातली ही प्रेमशक्ती समृद्ध करा म्हणजे तुमच्या मनात वारंवार येणारे नको ते विचार, ज्यामध्ये स्पर्धा, हेवा, दुसऱ्यांवर टीका, ऊठसूठ दुसऱ्यावर रागावण्याची भावना इ. असतात ते सर्व नाहीसे होतील आणि ही प्रेमभावनाच सदैव प्रकट होऊ लागेल.

ही प्रेमभावना प्रकट होऊ लागल्यावर तुम्हाला हृदय भरून टाकणारा आजच्यासारखा आनंद व उत्साह प्राप्त होईल. त्या प्रेमशक्तीमध्ये सगळ्या तऱ्हेच्या चुकीच्या गोष्टी, फालतू विचार, अनाठायी वाद-विवाद हे सर्व विरघळून जाते. त्यासाठीच सकाळ-संध्याकाळ ध्यान करणे जरूरीचे आहे आणि ध्यानाचा आनंद मिळवला पाहिजे. त्यातूनच दुसऱ्यांवर प्रेम करण्याची शक्ति मिळत असते. मग लहान-सहान गोष्टींवरून चिडचिड करणे, उगीचच अहंकार दुखावल्यासारखे वाटणे, दुसऱ्यांवर अकारण प्रभुत्त्व गाजवण्याची इच्छा करणे इ. चुका तुम्ही करणार नाही. सर्वांत उत्तम म्हणजे दुसऱ्या व्यक्तीच्या व्हायब्रेशन्स बघत जा. ज्याच्या व्हायब्रेशन्स खराब आहेत त्याच्याशी वाद-विवाद करण्यात वा त्याला आवरण्यात काही अर्थ नसतो. ज्याला अवाजवी आत्मप्रौढी असते त्याला शांत करण्यात किंवा काही पटवण्याचा प्रयत्न करण्यातही फायदा नसतो, त्याने त्याचा अहंकार जास्तच बळावतो. अशा वेळी प्रेमशक्तीचा योग्य तऱ्हेने वापर करण्यासारखा दुसरा उपाय नाही. गगनगिरी महाराजांचा राग मी कसा उतरवला ही गोष्ट तुम्हाला माहीत आहेच. ते तर लोकांना सांगत की, आदिशक्ती मुंबईला आहेत तर तुम्ही माझ्याऐवजी त्यांच्याकडे जा. पण त्यांची व्हायब्रेशन्स चांगली असल्यामुळे मी त्यांच्याकडे गेले व युक्तीने त्यांचा अहंकार कमी केला. प्रेमशक्ती ही तुम्हाला नेहमीच फालतू वा औपचारिक व्यवहाराच्या पलीकडे नेते.

म्हणून तुम्ही शुद्ध प्रेम बाळगून वागत जा आणि त्यांतूनच सर्व कार्य होत असल्याचे तुम्हाला जाणवेल. म्हणून प्रेमाचा वापर करण्याची सवय लावून घ्या, काही वेळा विशिष्ट लोकांवर त्याचा प्रभाव पडला नाही तरी हरकत नाही पण प्रेमाच्या वागण्यामधून तुम्हाला अनेक मित्र जोडता येतील. दिल्लीत मी सहजयोग सुरू केला तेव्हा अगदी मोजके लोक असायचे. पूजा वगैरेबद्दल त्यांना काहीच कळत नव्हते पण आता हजारोंनी सहजयोगी झालेले तुम्ही पहातच आहात आणि आजच्या या उत्साहपूर्ण व आनंदमय समारंभातून हेच प्रेम व्यक्त होत आहे. अशा प्रेमात तुम्ही रंगून गेलात की तुम्हाला कसल्याही

गोष्टींपासून आनंद मिळत राहील. पण हा आनंद स्वतःसाठी नसून दुसऱ्यासाठी असतो, तुमचे मन, तुमचे विचार, तुमचे वागणे सर्व काही दुसऱ्यासाठी असते व त्यात स्वार्थाचा लवलेशही नसतो. या प्रेमशक्तीचा एकदा अनुभव घेतलात की सर्व काही बदलून जाते, अंधारात दिवा आल्यावर सगळे काही स्वच्छपणे दिसून येते. त्या प्रकाशाला तसे कुणी सांगत नाही तर तो त्याचा धर्मच आहे. तुम्हाला आता हा प्रेमाचा प्रकाश मिळाला आहे आणि तो अगदी न बोलता- सवरता, उत्स्फूर्तपणे सहजपणे पसरणार आहे.

आज युवा-शक्तीचा उत्साह पाहून तर मला कौतुक करावेसे वाटते. नाहीतर आजकालची तरुण पिढी भलत्या मार्गाकडे वळत चालली आहे. पाश्चात्त्य देशात तर हा फार मोठाच प्रश्न झाला आहे. आपल्याकडे अजून तितके प्रकार नसले तरी आपल्या तरुणांतही त्याचे आकर्षण दिसू लागले आहे. म्हणून आजच्या या साऱ्या समारंभात तुमच्यामध्ये जो एकोपा दिसला तसा एकोपा जगामध्ये सर्वत्र निर्माण झाला पाहिजे. आपण त्या एकोप्यात सामावून राहिलो नाही तर जमिनीवरच्या थेंबासारखे कधीच विरून जाऊ. म्हणून सागरातील प्रत्येक थेंबही सागराचाच अंश म्हणून त्याच्याशी एकरूप होतो व जगतो तसे तुम्ही स्वतःचे स्वतंत्र अस्तित्व विसरून या प्रेमशक्तीच्या महासागरात सामावून गेले पाहिजे. म्हणजे सामाजिक, सांस्कृतिक व राष्ट्रीय भेदभावही कमी-कमी होत जातील. मगच आपले सर्व प्रश्न सुटतील. आणि तो काळ आता जवळ येत चालल्याचे मला दिसत आहे. जगातील सर्व पुढारी व उच्चाधिकारी मंडळींनी सहजयोग स्वीकारला तर हे फार लवकर घटित होईल. नाहीतर हे अस्तित्वाचे संघर्ष चालूच राहतील. तुम्ही जगभरचे सर्व सहजयोगी आता एक कुटुंब आहात. कलियुग संपत आले असून सत्ययुग प्रस्थापित करण्याचे आव्हान तुमच्यासमोर आहे. म्हणून ते कार्य कसे घटित करू शकू याचा प्रत्येकाने विचार करत राहिले पाहिजे, त्यासाठी आपण काय करू शकू याचा विचार करा. सहजयोग्यांनी हे विचार लिहून काढले तर जास्तच चांगले. या कार्याची धुरा तुम्हालाच सांभाळायची आहे, त्यासाठीच तुम्ही तुमचे चित्त व प्रेमशक्ती कार्यान्वित करायची आहे.

सर्वांना अनंत आशिर्वाद